सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - व्रज परिक्रमा - ५४

श्री कृष्ण: शरणं मम

Vibrant Pushti

" व्रज " हां! व्रज जाऊं पर और कोई धाम नहीं जाऊं 🙏
क्यूं?
व्रज जाऊं पर और कोई धाम नहीं जाऊं 🙏
क्यूं? बार बार कहते हो!
व्रज जाऊं पर और कोई धाम नहीं जाऊं 🙏
जहां मुझे वैष्णव मिलें तो मैं वैष्णव हो जाऊं 🙏
वहां मुझे प्रेम मिलें तो मैं प्रेमी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे विश्वास मिलें तो मैं विश्वसनीय हो जाऊं 🙏
वहां मुझे शुद्धि मिलें तो मैं शुद्ध हो जाऊं 🙏
वहां मुझे दासत्व मिलें तो मैं दास हो जाऊं 🙏
वहां मुझे सत्य मिलें तो मैं सत्यार्थी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे निरपेक्षता मिलें तो मैं निरपेक्ष हो जाऊं 🙏
वहां मुझे धर्म मिलें तो मैं धर्मिष्ठ हो जाऊं 🙏
वहां मुझे त्याग मिलें तो मैं त्यागी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे यज्ञ मिलें तो मैं याज्ञिक हो जाऊं 🙏
वहां मुझे निखालसता मिलें तो मैं निखालस हो जाऊं 🙏
वहां मुझे अद्वैत मिलें तो मैं अद्वैती हो जाऊं 🙏
वहां मुझे नि:स्वार्थ मिलें तो मैं नि:स्वार्थी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे नि:संशय मिलें तो मैं नि:संशयी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे निष्कपट मिलें तो मैं निष्कपटी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे आनंद मिलें तो मैं सर्वानंदी हो जाऊं 🙏
वहां मुझे सेवा मिलें तो मैं सेवक हो जाऊं 🙏
ओहहह! कितनी निस्पृहयता 🙏
हे प्रभु! मुझे तेरे व्रज को पाना हैं 🙏
मुझे व्रजवासी होना हैं 🙏
मुझे प्रेमी होना हैं 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सांस भरता हूं

तो श्री वल्लभ की असर होती हैं 🙏

सांस निकालता हूं

तो श्री पुष्टि प्राण की असर होती हैं🙏

सांस ठहराता हूं

तो श्री षोडश रस की असर होती हैं 🙏

सांस खींचता हूं

तो श्री वल्लभ आज्ञा की असर होती है 🙏

सांस बसाता हूं

तो श्री यमुनाजी की असर होती हैं 🙏

सांस पढ़ता हूं

तो श्री सुबोधिनीजी की असर होती है 🙏

सांस निहारता हूं

तो श्री श्रीनाथजी दर्शन की असर होती हैं 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा "

मन से कहेंगे तो किसीने नहीं देखा

पर

आत्म से कहेंगे तो आत्मीयता ने अवश्य देखा हैं 🙏

मन से कहेंगे तो हर कोई ने उन्हें प्रेम किया हैं

पर

आत्म से कहेंगे तो केवल उन्हीं ने प्रेम किया हैं

जिसने अपने आत्मा को स्पर्श किया हैं 🙏

मन से तो मान्यता हैं

आत्मा से केवल प्रेम हैं 🙏

कहींओ ने बहुत कुछ कहां

कि

मैं प्यार करता हूं

मैं प्यार करता हूं

पर

प्रेम तो वही ही करते हैं जो प्रेम में ही सर्वोत्तम पुरुषार्थ करते करते जीवन सिद्धांत को सत्य करता हैं 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

व्यापार प्यार - नहीं
खिलवाड़ प्यार - नहीं
उधार प्यार - नहीं
बदला प्यार - नहीं
एहसान प्यार - नहीं
कर्ज प्यार - नहीं
दूसरा प्यार - नहीं
पैसा प्यार - नहीं
फंसा प्यार - नहीं
तृषा प्यार - नहीं
छूटा प्यार - नहीं
भूला प्यार - नहीं
तूटा प्यार - नहीं
घटिया प्यार - नहीं
लुटा प्यार - नहीं
सौदा प्यार - नहीं
लज्जा प्यार - नहीं
नंगा प्यार - नहीं
घृणा प्यार - नहीं
भटका प्यार - नहीं
मुरझा प्यार - नहीं
खोया प्यार - नहीं
सोया प्यार - नहीं
मारा प्यार - नहीं
हिसाब प्यार - नहीं
जुठ्ठा प्यार - नहीं
हे प्यार! तु मधुर है - अमृत है - पूर्ण है 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सम्मुख दर्शन "
कहीं भी पहुंचते हैं 🙏
कहीं भी कार्य करते हैं 🙏
कहीं भी किसी से मिलते हैं 🙏
कहीं भी कुछ कहते हैं 🙏
कहीं भी कुछ सुनते हैं 🙏
कहीं भी कुछ करवाते हैं 🙏
तो हम किसी से - किसी के सम्मुख होते हैं 🙏
ऐसा क्यूं? सोचे! ऐसा क्यूं?
क्यूंकि सही और अपनी मनचाही - कर्म वैधानिक और कर्म सैद्धांतिक एक सहमति से क्रिया योग्यता पूर्वक पूर्ण हो - सम्मिलित हो - संतोषजनक हो - योग्य हो 🙏
अर्थात आमने-सामने हो कर बिल्कुल समझदारी और सावधानी और जवाबदारी से हो 🙏
ओहहह! तो जब हम श्री प्रभु के सम्मुख होते हैं तो - कैसे होते हैं?
अपने आप ही सोच लो🙏
हम एक सामान्यतः के लिए किसी के या किसी से सामने होते हैं तो जो भी मानसिकता से - शारीरिकता से - आत्मीयता से - विश्वास और समझ भरे होते हैं
तो
यह तो साक्षात श्री प्रभु के सम्मुख हो तो कैसे होने चाहिए?🙏
कोई झलक पाने या झलक दिखलाने जाते हैं?
कोई याचना या विनंती करने जाते हैं?
अगर - हां! तो कैसे जाते हैं?🙏
कोई शुभ संदेश - शुभ आमंत्रण - शुभ आज्ञा कहने या मांगने जाते हैं?
अगर - हां! तो कैसे जाते हैं?🙏
" सम्मुख होना 🙏
अर्थात विशुद्ध - पवित्र - निखालस - निर्मल - सरल - प्रियतम से होना हैं 🙏
नहीं कोई याचक, भिखारी, मजबूर, नादार, नापाक, असंतुष्ट हो कर 🙏
एक साधक, एक दास, एक भक्त, एक प्रिये हो कर होना हैं 🙏
श्री प्रभु तो सदा हमारे लिए खड़े हैं 🙏
श्री प्रभु तो सदा हमारी राह और चाह में इंतजार करते खड़े हैं 🙏
श्री प्रभु तो सदा हमें याद और पुकारते खड़े हैं 🙏
श्री प्रभु तो सदा शिस्तब्द्ध - नियमित - योग्यता पूर्वक - आदर पूर्वक हमारा सम्मान करने खड़े हैं 🙏
श्री प्रभु विश्वास, निखालस, पवित्रता, भक्ति संपूर्ण, प्रेमी स्वरुप अपना स्वागत करने निःस्वार्थ पूर्वक खड़े हैं 🙏
न कुछ लाओ - न कुछ पधराओ - न कुछ धरो - न कुछ दो - न कोई अपेक्षा - आकांक्षा - आशा
केवल निरपेक्ष - निर्मोही - निश्चल खड़े हैं 🙏 केवल लुटाना, देना और अर्पण करना 🙏
आनंद - आनंद - आनंद और आनंद 🙏
" सम्मुख दर्शन "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर कोई कहता हैं - मुझमें श्री प्रभु हैं 🙏

हर कोई कहता हैं - हां! कोई संचालन करने वाला तो हैं 🙏

हर कोई कहता हैं - जो भी कुछ करता हैं - तो उपर वाला 🙏

हर कोई कहता हैं - जहां भी देखो तो कुछ तो ऐसा हैं - जो किसीने रचाया हैं 🙏

कुछ भी कर लो - कोई भी धर्म - संस्कृति - संस्कार - पुरुषार्थ और विज्ञान - कोई तो हैं 🙏

गहराई से निरखें - कोई तो हैं 🙏

चाहें हम कुछ भी कर ले तो भी कोई तो हैं 🙏

कौन होगा?

जनम बीते, युग बीते, काल बीते तो भी कोई तो हैं जो हम ढूंढते और टटोलते रहते हैं 🙏

कोई तो हैं 🙏

आत्मा तो परमात्मा से

जीव तो माता-पिता से

न कोई अवकाश - न कोई आकाश

कोई तो हैं 🙏

ज्ञानी, विज्ञानी, प्रज्ञानी, सज्ञानी

भाव, भक्ति, शक्ति और कृति

टटोल टटोल और टटोल

तो भी कोई तो हैं 🙏

कौन हैं?

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गृह सेवा - हवेली दर्शन - बैठकजी झारीजी भरण - श्री यमुना पान - गोवर्धन परिक्रमा - श्री मद् भागवत कथा और मनोरथ उत्सव - सत्संग "

पुष्टिमार्गिय सेवा दर्शन यात्रा क्रमांक जो हर पुष्टि संप्रदाय जीव मन, तन, धन, जीवन मान्यता शैली में जन्म जीवन कृतार्थ करता हैं 🙏

जो गुरु आज्ञा, गुरु दिशा, गुरु निर्देश, गुरु मार्गदर्शक और गुरु शिक्षा से अध्ययन करते हैं। जीव अपने आपको अधिकार पाते पाते स्व धन्य धन्य और आनंद की अनुभूति पाता हैं - जन्म जीवन पुरुषार्थ सार्थक करता हैं 🙏

यही ही धर्म संप्रदाय शैली से धन, धान्य, समृद्धि, एश्वर्य और मान सम्मान पाते मानसिक - सामाजिक - सांस्कृतिक और धार्मिक योग्यता का मापदंड सर करता हैं 🙏

यही ही परिणामिक - सिद्धि उपासक - श्री गुरु कृपार्थी और धर्म पारायण की उपाधि प्राप्त करता हैं और स्वगति यथार्थ करता हैं 🙏

यही ही धारणा हैं 🙏 यही ही धारा हैं 🙏

यही ही काल चक्र हैं 🙏 यही ही परम धाम सीडी हैं 🙏

मैं अवश्य चाहता हूं कि आपका अभिप्राय और सत्कर्म सत्संग अनुभव का समाज को स्पर्श हो🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः

तुम्हारे पास क्या क्या हैं!

ओहहह - नजर

ओहहह - स्वर

ओहहह - विचार

ओहहह - झंखना

ओहहह - आशा

ओहहह - वादा

ओहहह - इरादा

ओहहह - तडप

ओहहह - विरह

ओहहह - त्वरा

ओहहह - याद

ओहहह - नाम

ओहहह - प्यार

सच! जबसे प्यार का असर हुआ

बस! यह मन - नैन और धड़कन भटकने लगा हैं 🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खोयें खोयें नैन हैं

रुकी रुकी पलकें हैं

एक नज़र ऐसी इधर उधर तडपती हैं

जहां जहां पहुंचें नजर

बस केवल तु ही तु हैं

यह असर ऐसी हैं

जिधर देखूं उधर तु ही तु

ये क्या हैं कान्हा?

क्या? प्रेमी को केवल तु ही दिखाएं

जैसे तेरा प्रेम समर्पण 🙇

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙇🌷

" मन - मानसिक - मानस "
ओहहह कितने मन!
ओहहह कितनी मानसिकता!
ओहहह कितने मानस!

तो तो अवश्य ही योग्य विचार 🙏
तो तो अवश्य ही योग्य समझ 🙏
तो तो अवश्य ही योग्य क्रिया 🙏
अरे! इतने सारे चौराहे! क्यूं?
अरे! इतने सारे स्पीड ब्रेकर! क्यूं?
अरे! इतने सारे टर्निंग पॉइंट! क्यूं?
अरे! इतने सारे ठेले! क्यूं?
अरे! इतने सारे एक ही काम करने वाले! क्यूं?
अरे! इतने सारे रॉन्ग साईड से आने वाले! क्यूं?
अरे! ओहहह! कितने प्रकार का हॉर्न बजे! क्यूं?
अरे! अरे! इतने सारे अपने सूचन करने वाले!
ओहहह! कितनी सारी स्कूलों 👍
ओहहह! कितने सारे पाठ्य पुस्तकें 👍
ओहहह! कितने सारे स्नातक 👍
ओहहह! अति बुद्धिमान!
ओहहह! अति ज्ञानवान!
ओहहह! अति स्मार्ट!
एक नियम के अनेकों अर्थ 🙏
एक क्रिया के अनेकों मर्म 🙏
एक मानस के अनेकों चरित्र 🙏
सच! यहां तो बुद्धि का सागर हैं 🙏
सच! यहां तो सूचनों की धाराएं बहती हैं 🙏
सच! यहां तो बिना बीज फल उगते हैं 🙏
प्रणाम 🙏 प्रणाम 🙏 प्रणाम 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रेम "

हैं कुछ ऐसा जो परमात्मा में परिवर्तन करता हैं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो परमानंद में डूबोता हैं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो सदा साथ निभाता हैं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो मन को हंसाता हैं, नैनों को रुलाता हैं और दिल को चुभता हैं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो कभी बिछड़ता नहीं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो कभी विश्वासघात करता नहीं 🙏

हैं कुछ ऐसा जो चाहें तरछोडो, तोड़ो, घृणा करो, भटकावों पर प्रेम सदा प्रज्वलित ही रहता हैं 🙏

तभी तो एकरुप होता हैं - दिल में समाता हैं 🙏

हे प्रिये! 🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जागता हूं प्रेम के सूरज के साथ

सोता हूं प्रेम की निशा के साथ

पलकें खूले प्रेम के दर्शन के साथ

नैना मूंदे प्रेम की शीतलता के साथ

नाद सूने प्रेम के सूर के साथ

मन नाचें प्रेम की वाणी के साथ

अंग तड़पे प्रेम के रंग के साथ

धड़कन धड़के प्रेम की गूंज के साथ

कान्हा! मैं जहां हूं तु हैं वहां

यही ही हैं हमारे प्रेम का छूआ

घड़ी घड़ी तु स्मरण में आये

हर दिशा तु ही तु दिखाएं

कैसे तु बिछड़े हम से दूर?

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

"राधा "

नैनों में श्याम

नजर में श्याम

द्रष्टि में श्याम

बिंब में श्याम

प्रतिबिंब में श्याम

तेज में श्याम

अंधकार में श्याम

साया में श्याम

परछाईं में श्याम

अश्रु में श्याम

पलक में श्याम

अपलक में श्याम

मूंद में श्याम

नींद में श्याम

सपने में श्याम

जाग में श्याम

दर्पण में श्याम

द्रश्य में श्याम

अद्रश्य में श्याम

तिरछे में श्याम

सामने में श्याम

प्रत्यक्ष में श्याम

अप्रत्यक्ष में श्याम

झुकने में श्याम

हर्षाश्रु में श्याम

विरहाशु में श्याम

तृष्णा में श्याम

तकते में श्याम

काजल में श्याम

कजरा में श्याम

अंगारे में श्याम

दहक में श्याम

शीतलता में श्याम

उग्रता में श्याम

स्वीकार में श्याम

एकरार में श्याम

दूरियां में श्याम

नजदीकियां में श्याम

हे श्याम! तु नैनों में श्याम

श्याम 🙏 श्याम 🙏 श्याम 🙏

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मां "

" मां " को जिसने पहचाना उन्हें " श्री कृष्ण " को छूआ 🙏

जो हमें सही संस्कार दे 🙏

जो हमें सही दिशा दिखाएं 🙏

जो हमें सही ज्ञान दें 🙏

जो हमें सही साधन दें 🙏

जो हमें सही मार्ग पर चलाएं 🙏

जो हमें सही रंग चढ़ाएं 🙏

जो हमें सही शिक्षा शिखाएं 🙏

जो हमें सही वात्सल्य जगाएं 🙏

जो हमें सही आंचल ओढ़ाएं 🙏

जो हमें सही भोजन खिलाएं 🙏

जो हमें सही आचार चराएं 🙏

जो हमें सही विचार जताएं 🙏

जो हमें सही भक्ति वर्धाएं 🙏

जो हमें सही शक्ति अर्थाएं 🙏

जो हमें सही पुष्टि वर्ताएं 🙏

जो हमें सही द्रष्टि दर्शाएं 🙏

जो हमें सही सृष्टि संवारें 🙏

जो हमें सही सिंचन सिंचे 🙏

जो हमें सही चिंतन चित्ते 🙏

जो हमें सही कीर्तन कृत्ते 🙏

जो हमें सही पवित्रता संवर्धने 🙏

जन्म से नहीं सही जीवन से " मां " पहचाने जाती हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम ऑ श्याम

श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम

हे श्याम! हे श्याम!

श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम

हे...... श्याम!

श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम

हरे श्याम हरे श्याम

श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम

आ........आ श्याम

श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम

🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम तुझे मिलने की प्यास हैं

कहीं जन्मों की यह आश हैं

कभी तु वृंदावन में बसे

कभी तु नंदगांव में बसे

कभी मेरे नैनों में बसने आ

श्याम तुझे मिलने की प्यास हैं

गौचारण को तु दौड़े

माखन मटकी तु फोड़े

कभी तु मेरे जनम को छोड़ें

श्याम तुझे मिलने की प्यास हैं

सदा तु भक्त के आशरे

सदा तु प्रेम के सहारे

कभी तु मेरे प्रेम में तरसें

श्याम तुझे मिलने की प्यास हैं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पुष्टि जीव "

बार बार सुनते हैं - कहते हैं - पढ़ते हैं 🙏

" वैष्णव " बार बार सुनते हैं - कहते हैं - पढ़ते हैं 🙏

जीव कक्षा हैं - उपाधि हैं या धर्म सिंचन हैं?

श्री वल्लभाचार्यजी का चरित्र समझते समझते ऐसी जिज्ञासा जागती हैं कि -

श्री वल्लभ परिक्रमा करते करते पुष्टि जीव को मिले 🙏

अर्थात यह हुआ कि " पुष्टि जीव " का पार्दुभाव पहले से हैं 🙏 और श्री वल्लभाचार्य के परिभ्रमण से श्री आचार्य उन्हें पहचान कर उन्हें अपने साथ लेकर या कोई आज्ञा करके उन्हें जीव उद्धार वैष्णव की प्राथमिक भूमिका के लिए आहिर्भाव करते हैं 🙏

अर्थात " पुष्टि जीव " पार्दुभाव केवल परब्रह्म परमात्मा ही करते हैं 🙏

जैसे श्री गोप गोपीएं - श्री उद्धव - श्री सखाएं 🙏

" वैष्णव " जो यही पुष्टि जीव और श्री आचार्य चरण की कृपा से कोई जीव सैद्धांतिक नियमन से अपना जीवन शिक्षित करें - यापन करें तो वह सामान्य जीव वैष्णव की कक्षा में जन्मों जन्म की तपस्या से वह " वैष्णव " की कक्षा उपाधि पाता हैं 🙏

यह वैष्णव में वह - पुष्टि वैष्णव - मर्यादा वैष्णव और प्रवाही वैष्णव में कक्षित होते हैं 🙏

यह समझना हर जीव की योग्यता आधारित हैं 🙏 जो संग से समझ सकते हैं - जो रंग से समझ सकते हैं - जो चरित्र से समझ सकते हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्रीनाथ! वापस आजाओ गोवर्धन में

एक एक शिला पड़ी बैचैन सुनी रे

श्रीनाथ! गिरिराज धरती में समाता हैं

तिल तिल कर खुद को नष्ट करता हैं

तु आ कर उन्हें संवारते जाओ

एक एक शिला पड़ी बैचैन सुनी रे

श्री अष्टसखाएं तेरे दरश को तरसे

श्री वल्लभाचार्य तेरे मिलन को तड़पे

तु एक बार उन्हें अंग लगा आओ

एक एक शिला पड़ी बैचैन सुनी रे

पुष्टिमार्ग दशा दिशा डूब रही हैं

पुष्टि जीव विरह वेदना में छूट रहे

तु वैष्णव पंथ उजागर करते जा

एक एक शिला पड़ी बैचैन सुनी रे

श्री वल्लभ अपने वंश से भागे

श्री यमुना अपना अस्तित्व त्यागे

तु गोवर्धन लीला प्रक्टाये जा

एक एक शिला पड़ी बैचैन सुनी रे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" માતા "

આજ નો સમય

આજ ની રીત ભાતો

આજ ની રહેણીકરણી

આજ ની વિચાર ધારા

આજ ની સામાજિક પ્રવૃત્તિઓ

હે માતા! સાચે જ તું છે તો હું આનંદિત છું🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો હું સુખી છું 🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો મને ભોજન મળે છે 🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો મારાં બાળકો સચવાય છે 🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો જ મને હુંફ છે🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો જ મને સાંત્વન મળે છે 🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો જ મને એક્તા છે 🙏

હે માતા! સાચે જ તું છે તો મને સેવા મળે છે 🙏

હે માતા! ભલે હું અપશબ્દો બોલું છું તે પણ તું ગળી જાય છે 🙏

હે માતા! ભલે હું ગુસ્સે થાઉં છું પણ તું શાંત રહે છે 🙏

હે માતા! તું ક્ષણે ક્ષણે મારી કાળજી રાખે 🙏

હે માતા! એક મને નાની બિમારી આવે અને તું બેબાકળી 🙏

હે માતા! હું ક્યારે તારું ઋણ ચૂકવીશ! 🙏

હે માતા! ભલે હું માતા બની કે પિતા બન્યો પણ નાં હું કંઇ સમજ્યો 🙏

માફ કરતા કરતા - કરુણા વરસાવતા વરસાવતા 🙏

તું મારી માતા બની પણ નાં હું તારી દીકરી બની શક્યો કે નાં હું તારો પુત્ર 🙏

કોણ મને માફ કરે?

કારણકે જો સાક્ષાત શ્રી પ્રભુ જ મારી સાથે રહે અને હું નાં ઓળખી શક્યો🙏

કેવી હું અભાગણ - કેવો હું અભાગો કે શ્રી પ્રભુ પામવાં અને સમૃદ્ધિ પામવાં જગત ભટકું! 🙏

" વાયબ્રન્ટ પુષ્ટિ "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" यात्रा "

कौन नहीं जाता? हर जीव जाये - हर अंश जाये - हर तत्व जाये 🙏

जो जाये वह पाये🙏

जो जाये वह समाये 🙏

जो जाये वह जगाये 🙏

जो न जाये वह पस्ताये 🙏

यात्रा - परिक्रमा - परिभ्रमण 🙏

कदम कदम पर शरणं 🙏

कदम कदम पर वरणं🙏

कदम कदम पर पूर्ण🙏

कदम कदम पर परिवर्तन 🙏

कदम कदम पर अर्चन 🙏

कदम कदम पर वंदन🙏

कदम कदम पर नमन🙏

भक्ति भाव पधारे 🙏

ज्ञान विज्ञान पधारे 🙏

रंग तरंग पधारे 🙏

प्रेम प्रीत पधारे 🙏

तन का रथ - मन का स्थिर

नैनों का तीर्थ - सांसों की अस्थि

जो तन से निरोगी - जो मन से नियोगी

जो नैनों से वियोगी - जो सांसों से प्रयोगी

परब्रह्म अवतार - श्री अवतरण

आचार्य पार्दुभाव - आत्मा मृत्युंजय

यह है यात्रा - यह है परियात्रा

यह है प्रेम पात्रा - यह है विरह धात्रा

रथयात्रा की बधाई

स्वयात्रा की जगाई

मानसीयात्रा की रंगाई

पदयात्रा की पूर्वाई 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय जगन्नाथ " 🌷🙏🌷" जय श्री नाथ " 🌷🙏🌷" जय श्री विश्वनाथ " 🌷🙏🌷

हे माधव! हे कन्हैया!

तु आया या तु पधारा या तु अवतारा!

जब भी अकेला होता हूं तब तुम्हारी याद आती हैं 🙏

ऐसा क्यूं?

शायद तु हमें याद करता होगा - जब कोई याद करता हैं तो अवश्य जिन्हें याद करते हैं उन्हें एहसास या कोई असर या कोई स्पर्श या कोई अनुभव होता ही हैं 🙏

ऐसा क्यूं?

तु भी पूरा ब्रह्मांड को संभालता हैं और मैं भी मेरा संसार संभालता हूं 🙏

संभालते संभालते कभी तेरी याद मुझे आती हैं और कभी तुम्हें मेरी याद आती हैं

पर

कहीं समय से मुझमें कुछ ऐसा होता हैं कि - कहीं जन्मों से मैं भटकता हूं और हर जनम में थोड़ा कुछ असर पाता हूं - जानता हूं कि कोई तो हैं जो मेरा हैं, चाहें मैं मानु या न मानु पर हैं कोई जो मुझमें हैं और मुझे संवारता हैं - संभालता हैं।

यह जन्म में मुझे पल पल असर होती हैं कि कोई तो हैं जो तुम्हारा हैं तुमसे प्रेम करता हैं 🙏

क्रमशः

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मृत्यु के बाद "

पता नहीं आजकल एक ऐसी आंधी चली हैं - यह कर्म सिद्धांत और धर्म सिद्धांत की मृत्यु के बाद क्या?😭

हर कोई ज्ञानी, हर कोई भावुक, हर कोई अनुयायी और हर कोई संप्रदाय आचार्य 😭

साथ साथ में हर कोई वडील, हर कोई सामाजिक सेवक, हर कोई समझु स्नेहीजन और निकटतम प्रतिनिधि 😭

ऐसा क्यूं?

१. स्व अज्ञानी - स्व अभावी

२. स्व अजिज्ञी - स्व स्वभावी

३. स्व कुटुंब मार्गी - स्व समाज मार्गी

४. स्व अहमी - स्व अहंकारी

५. स्व स्वार्थी - स्व अपेक्षि

६. स्व अनिश्चयी - स्व अनिर्णयी

७. स्व धन वृत्तिय - पर धन विक्रिय

८. स्व द्रष्टि निर्माल्य - पर प्रतिष्ठा द्रष्टिय

९. स्व चार दिशय - स्व अपुरुषार्थाय

१०. स्व नपुंसक्य - स्व बुद्धिहीन

११. स्व आडंबराय - स्व धनखायो

१२. स्व धर्म उपेक्षित - स्व कर्म अवैधनिक

ओहहह! हम कितने अपेक्षित और उपेक्षित की हम अपने आपको योग्य न कर पाएं!

हमें बार बार - याद कराएं

हमें बार बार - विमर्श में गंवायें

बस मारो मारो और मारो

ऐसा क्यूं?

ऐसा नहीं होना ही हमारी जीवनी हैं 👈

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷😭🌷

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे गोविंद! तुम्हें सौंप दिया

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे गोपाल! तुम पर लुटा दिया

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे माधव! तुम पर न्योछावर

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे मोहन! तेरे मोह में

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे मुकुंद! तेरे शरण में

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे श्याम! तेरे संग में

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे कान्हा! तेरे रंग में

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे कृष्णा! तेरे चरण में

नैन - मन - तन - धन - जीवन
हे कन्हैया! तेरे स्मरण में

मैं प्रेम दास - तु प्रेम आश
मैं प्रेम उपासक - तु प्रेम प्रकाशक
मैं प्रेम याचक - तु प्रेम धारक
मैं प्रेम रज - तु प्रेम व्यापक
मैं प्रेम तत्व - तु प्रेम पूर्णत्व
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" धर्म " अर्थात शिस्तब्द्ध सैद्धांतिक सत्य जीवन शैली को धरना, स्वीकारना, अपनाना और जीवन पर्यन्त निभाना 🙏

कोई यह कहे - कोई वह कहे - कोई ऐसा करे - कोई ऐसा विचारे - कोई ऐसा करवाते, समझाये और दर्शाये 🙏

धर्म तो स्व द्रष्टि, सृष्टि, पुष्टि और यष्टि हैं 🙏

हां! कोई कैसी भी रीत से अपना प्रमाण जताएं पर जो स्व ने जाना, समझा और स्वीकारा और अपनाया जिससे स्व की सत्य पहचान हो और यही पहचान से आनंद का अनुभव हो तो अवश्य वह धर्म ही हैं 🙏🌷🙏

आडंबर, विवेचना, अधूरपता, संशय, स्वार्थ, पराधीनता, अनिश्चितता, धृष्टता, दुष्टता, अर्धसत्यता, डरपोक, निंदनीय और अपेक्षित हो तो वह धर्म - धर्मि और नहीं हैं 🌷🙏🌷

पैसा से धर्म नहीं गठता

मिलकत से धर्म नहीं व्यापता

समृद्धि से धर्म नहीं सुख देता

रुप से धर्म नहीं संस्कृतता

जो भाव से भक्त से अयोग्यता से कोई भी प्रकार की न्योछावर और द्रव्य लुटे वह तो धृतराष्ट्र से भी कुपात्र जीव हैं 🙏

चाहे वह अपने आपको कोई भी कुल का समझे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे गोविंद! हे गोपाल! हे गोविंद! हे गोपाल!
मेरे नैना बरस बरस जाये
मेरे नैना तरस तरस जाये
कबसे खडा तेरे द्वार पर
एक झलक एक झांकी
यह विरह नैना तुझे छू ले
पर
तु इतना कठोर तु इतना ठठोर
तुने नहीं ली यह नैनों की सुध
तुने नहीं ली यह नैनों की भूख
मैंने प्रेम तुमसे किया हैं
तुमने मुझसे पता नहीं
पर इतना पता अवश्य हैं
कि
यह प्रेम तो तुमने हमें जताया
हम तो ऐसे इधर उधर भटकते थे
तुने कहीं से एक नैना मिलाया
नैना मिलते ही जो कुछ जागा
बस वही पल से
मैं तेरा और तु मेरा हो गया
आज जब तेरे द्वार जो आया
तो
तु क्यूं देर करता हैं?
तु ऐसा समझता हैं
कि
मैं मजबूर हूं
मैं मनहूस हूं
मैं मगरुर हूं
मैं कसूरवार हूं
मैं निराधार हूं
मैं दूराचार हूं
मेरा यह केवल शिष्टाचार हैं
तो तु भूल रहा हैं
मैं तु हूं केवल तु
अब कितनी भी देर कर
तु ही तुझसे दूर
अब तो यह प्रेमात्मा पुकारती हैं
तुने कहां लगाई इत्ती देर
अरे ओ सांवरिया! ❦ सांवरिया! सांवरिया ❦
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " ❦🙏❦

ખાવું, પીવું અને ઊંઘવું હમણાં બહું જ મઝા આવશે

સિનેમા જોવા, સીરીયલ જોવી, રખડવું હમણાં બહું જ મઝા આવશે

બહાર વારંવાર ખાવું, બહાર વારંવાર ફરવું હમણાં બહું જ મઝા આવશે

પણ જો કાળજી શરીર ની નાં રાખી

તો બધી જ મઝા અવળી

એક રોગ લાગ્યો કે જીવન ભર ગુલામ

મઝા તો હમણાં માંણી લઈએ કાલ કોણે દીઠી છે?

ખાંડ, મીઠું અને મરચું હમણાં મઝા થી જમો

એક દવા કાયમી સાચે જ વર્ષો કાઢતાં હેરાન થવાશે

ઉંઘ નહીં આવે

મન ભટકાવે

જન્મ જીવન બન્ને સતાવે

જાગો જાગો જાગો

અમે તો જઈ રહ્યા છે

બાળકો મોટાં થઈ રહ્યાં છે

જો હમણાં જાગ્યાં તો બાળકો જાગ્યા

જો હમણાં ઊંઘ્યા

બસ 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रा "

नहीं कह सकते हैं आगे

नहीं लिख सकते हैं आगे

नहीं सुन सकते हैं आगे

नहीं समझा सकते हैं आगे

" रा "

हैं श्री कृष्ण का मन

हैं श्री गोविंद का तन

हैं श्री गोपाल का धन

हैं श्री कान्हा का प्रेम

हैं श्री मुकुंद की बंसी

हैं श्री मोहन की लीला

हैं श्री कन्हैया की आत्मा

हैं श्री माधव का विरह

हे प्रेमेश्वरी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मंगल प्रभात "

" मंगल दर्शन "

" मंगल दिवस "

" मंगल जीवन "

ओहहह! मंगल - मंगल - मंगल - मंगल

मंगल प्रभात से मेरे मन तन में जागे मंगल उर्मि

मंगल दर्शन से मेरे नैनों में बसे मंगल संकल्प कार्य

मंगल दिवस से मेरे पुरुषार्थ से हो मंगल समाज

मंगल जीवन से मेरे चरित्र में उत्से मंगल संस्कार

मंगल मंगल मंगल मंगल

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

જન્મ ધર્યો - શ્રી માતાપિતા ની પરિક્રમા 🙏

વિદ્યા પામ્યા - શ્રી આચાર્ય ની પરિક્રમા 🙏

લગ્ન બંધાયા - શ્રી સંસાર ની પરિક્રમા 🙏

પુત્ર-પુત્રી સંસાર માંડ્યા - શ્રી સમાજ ની પરિક્રમા 🙏

વૃદ્ધ થયા - શ્રી ધર્મ ની પરિક્રમા 🙏

આખરી પડાવ - શ્રી કર્માનુસાર નવ જન્મ ની પરિક્રમા 🙏

પરિક્રમા ને સમજ્યા તો કેવળ એક જ પરિક્રમા 🙏

પરિક્રમા ને ન સમજ્યા તો પરિક્રમા પરિક્રમા પરિક્રમા 🙏

હે પ્રભુ! ઋણાનું બંધન થી છોડાવે એ પરિક્રમા કરાવ 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

મોહન મળે માટે મન મેળવું

માધવ મળે માટે મનન કરું

મુકુંદ મળે માટે મુખ મલકાવું

મુરારી મળે માટે માળા જપુ

મુરલીધર મળે માટે મસ્ત નાચું

મધુસૂદન મળે માટે મગન રહું

મધુરાધિપતી મળે માટે મધુર રાંચુ

માખણચોર મળે માટે માખણ લુંટાઉં

મદનમોહન મળે માટે મંથન ધરું

મદનગોપાલ મળે માટે મુજ શરણું

હે મનમોહન! આ મન તને સમર્પણ 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

एक गहरी सी बात हैं 🙇

कान्हा ने गोकुल वृंदावन नंदगांव छोड़ा और मथुरा आये

यह तो हर कोई जानता हैं 👍

कृष्ण ने मथुरा छोड़ा और द्वारका आये

यह भी हर कोई जानता हैं 👍

बस! यही ही समझना हैं कि

श्री कृष्ण ने व्रज छोड़ा या नहीं?

व्रज छोड़ा तो क्यूं छोड़ा?

यह प्रेम की बात हैं उधो!

न कोई इतिहास या न कोई तर्क़ नहीं जानना हैं 🙇

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙇🌷

हे कान्हा!

तेरे नैनों से मिलते मेरे नैना

तुझसे मचलने का मन होता हैं

तेरे स्वरों से मिलते हैं मेरे स्वर

तुझसे चुम्बन लेना का मन होता हैं

तेरे बिखरते जुल्फों से उड़ती लटें

तुझसे गुल जाने का मन होता हैं

तेरी प्यार भरी मुस्कान से बहती धारा

तुझसे तेरा रस पीने का मन होता हैं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"स्वामी हमें ना बिसारींयो लाख लोग मिल जाएं

हमसे तुमको बहोत हैं तुमसा हमको नाय "

हे श्रीनाथजी! आपको और तो क्या कहिएं 🙏

"द्वार नाथ न हम जानिए

नैन द्वार आप मूल द्वार

धन वैभव क्यों आपसे चाहिए

बस सदा बसो हृदय द्वार "

"कुंभनदास की एक ही याचना 🙏

खेलन को जब मन हुएं

आजाओ हमरे जीवन द्वार"

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

ओहहह! कितना अदभुत 🙏

एक क्षण भर भी मन-तन-धन-जीवन को स्थिर करके ऐसा सोचा-चिंतन-अध्ययन किया हैं

कि

ऐसी क्षण मेरे जीवन में आएं?

"कुंभनदास की एक ही याचना 🙏

खेलन को जब मन हुएं

आजाओ हमरे जीवन द्वार"

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

बारिश का मौसम

बादल हैं

बिजली हैं

कभी बादल गरजता हैं

कभी बिजली करवटती हैं

प्यार की प्यास ऐसी

दोनों एक दूजे के लिए तरसते हैं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

व्रज में वन वन हैं

वृंदावन में यमुना हैं

गोवर्धन पर कान्हा हैं

एक कुंज निकुंज में तड़पे

एक जंगल जंगल भटकें

प्रेम की रीत ऐसी

दोनों एक दूजे के लिए तड़पते हैं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ज्योत जगी ऐसी

जो न सावन बुझाएं

तड़प उठी ऐसी

जो न नैना मिलन समाएं

विरह वैदी ऐसी

जो न सांसों एक से छूटे

तु कहें हे प्रियतम!

न आंसू से बुझा

न नजर से मिटा

न साथ साथ रहने से छूटा

प्रेम की आग ऐसी लगी ऐसी लगी

कि आज भी यमुना तरसी

कि आज भी सागर तरसा

कि आज भी आसमां तरसा

कि आज भी द्रारका तरसा

कि आज भी वृंदावन तरसा

कि आज भी आत्मा तरसा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वृन्दावन सो वन नहीं,
बंशीवट सो वट नहीं,
राधा मेरी स्वामिनी,
मैं राधा का दास।🙏

जनम जनम मोहे दीजियो,
श्री वृन्दावन को वास।
वृन्दावन के वृक्ष को,
मरम न जाने कोय।
डाल डाल पात पात में ,
राधा राधा होय।।

राधा राधा कहत ही,
प्रेम दीपक होय,
नैनों में राधा,
मन में राधा,
तन में राधा,
धन में राधा,
जीवन में राधा,
तो
कान्हो दौडतो धाय,
हाथ पकड़ कर ले जाय,
श्री प्रेम वृंदावन धाम,
सदा कहें कदी न बिछड़्यो
मेरो प्रियतम वृंदावन धाम 🙏🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷 *राधे राधे*

" વ્રજ પરિક્રમા " એટલે શું?

આપ સહુ આ પરિક્રમા કરવાનો નિર્ણય કર્યો છે. ધન્યવાદ 🙏

આપ સહુએ અવશ્ય જાણવું અને સમજવું જ જોઈએ 🙏

આ પરિક્રમા ભૂતલ પર કોને શરૂ કરી?

આ પરિક્રમા શરૂ કરવાનો આશય શું?

આ પ્રશ્નો અવશ્ય આપણાં મન માં ઉઠવા જોઈએ 🙏

" Vibrant Pushti "

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" शृंगार " + " प्रेम " = प्रेम शृंगार 🌷

यह ख्यालों में क्या बसा है?

यह नैनों में क्या कजरा है?

यह मन में क्या मचलता है?

यह सांसों में क्या उच्छ्वता है?

यह अधर पर क्या थरथराता है?

यह स्वर में क्या गूंजता है?

यह तन में क्या अगनता है?

यह रंग में क्या घूंटता है?

यह आंचल में क्या लहराता है?

यह उर्जा में क्या महकता है?

यह नथनी में क्या नथता है?

यह हडपची में क्या चुमता है?

यह कंठ में क्या लटकणता है?

यह हाथों में क्या खनकता है?

यह कमर में क्या झुमता है?

यह पैरों में क्या थनकता है?

यह जुल्फों में क्या गजरा है?

हे प्रियतम बसा यह नैनन में

हे पिया भरा यह मनन में

हे प्रिये अंगना यह अंग में

हे प्रेमी रंगा यह आंचल में

हे प्रेम खिला यह आत्म में 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

પુષ્ટિમાર્ગિય સૈદ્ધાંતિક વ્યક્તિત્વ માટે અતિ ઉત્તમ આનંદોત્સવ એટલે " વ્રજ પરિક્રમા " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા " નો સંકલ્પ જ મન તન અને આત્મા માં આનંદની ઉર્મિ નાં સ્પંદનો જગાડે છે 🙏

ઓહહહ! જન્મ થી સાંભળેલી લીલાઓનો સાક્ષાત્કાર 🙏

ઓહહહ! બાળપણમાં વાંચેલી અનેક લીલાઓ નું દર્શન 🙏

ઓહહહ! મારા વિશ્વાસ અને શ્રધ્ધા નો અનુભવ 🙏

ઓહહહ! મારા જીવનનાં મધુર પાત્રો સાથે મારો એકાકાર 🙏

ઓહહહ! આનંદની ઊર્મિઓ નાં સાગર માં ડૂબવું 🙏

ઓહહહ! મન વિશુદ્ધ - તન પવિત્ર - નયન - નિરપેક્ષ અને જીવન સમર્પણ 🙏 કેટલું અદભૂત 🌷

મધુર મધુર મધુર મધુર મધુર મધુર 🌷

સાચે જ અનોખું 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

સંકલ્પ લીધો - નયન માં અનેક દ્રશ્યો જાગે

કેવું હશે વ્રજ! કેવી હશે ભૂમિ! કેવું હશે આકાશ! કેવું હશે જલ! કેવું હશે જીવન! પંખીઓ ગીત ગાતાં હશે! ગાયો ભાંભરતી હશે! ગોપ ગોપીઓ નાચતાં કુદતા હશે! કેવી હશે યમુનાજી! કેવો હશે ગોવર્ધન! ઓહહહ!

મનમાં તરંગો દોડવા લાગ્યા - વ્રજ! કેવું અનોખું સ્થાન! કેવું અનોખું વાતાવરણ! કેવી અનોખી લીલા! કેવી અનોખી કલા! કેવા અનોખાં પરિધાન! કેવા અનોખાં રંગ! કેવા અનોખાં લોકો! કેવા અનોખાં અન્ન! કેવા આનંદ કરતા લૂંટતા જીવનો!

વ્રજ વ્હાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું 🙏

આવા જ ઉમંગ ઉલ્લાસ અને ઉત્સાહ ભરેલા વિચાર તરંગો આખા તનમાં - શરીરમાં અનેકો ઊર્મિઓ વહેવા લાગી અને - ચલો - ચાલો અને ચાલો

વ્રજ જઈએ, વ્રજ પહોંચીએ, વ્રજ પામીએ 🙏

થનગનાટ થનગનાટ અને થનગનાટ 🙏

અંગ અંગ આનંદથી ઉભરાય 🙏

મને વ્રજ જાઉં છે 🙏

મને વ્રજ જાઉં છે 🙏

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

" વ્રજ "

વ્રજ - શાસ્ત્રો, પુરાણો, કીર્તનો, કથાઓ, સત્સંગો અને પ્રવચનો 👆

વ્રજ ની અનેક વ્યાખ્યાઓ, અર્થો, કલ્પનાઓ અને સ્પર્શ સ્પંદનો એ વ્રજને અનેકો ધારણા, અનુભૂતિ, સરખામણી અને વિચારોની ઊર્મિઓ થી આજદિન સુધી એટલી કંડારી છે કે વ્રજ શબ્દ, અક્ષર અને ગૂંજ થી પરમ પ્રેમ કક્ષા પર આ વ્રજ અવિચલ, અચલ, અખંડ સ્થિતપ્રજ્ઞતા માં ઉભું છે 🌷🙏🌷

વ્રજ ની વ્યાખ્યા આત્મા - પરમાત્મા - સર્વાત્મા જ પામી શકે છે 🌷🙏🌷

જીવ નાં જીવન નો મૂલ સિદ્ધાંત વ્રજ થી આરંભ થાય છે 🙏

જીવ નું પરિભ્રમણ વ્રજ થી સમાપ્ત થાય છે - જે લીલા થી પવિત્ર પ્રેમમય માં પરિવર્તન પામે છે 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

પરિક્રમા - સદા સ્પર્શીય - સ્મરણીય - સંસ્કરણીય - સ્પંદનીય - સંબંધીય રહેવું એટલે પરિક્રમા 🙏

મન થી સાથ સાથ - અંગ થી હાથ હાથ - ધન થી ગાથ ગાથ - આત્મા થી નાથ નાથ જાગવું અને જગાવવું અને જોડાવવું એટલે પરિક્રમા 🙏

કણ કણ - રજ રજ - ક્ષણ ક્ષણ - ઘડી ઘડી - અક્ષર અક્ષર - તલ તલ - દલ દલ - જર જર - ડગ ડગ - રગ રગ - દર દર - સ્વર સ્વર - ઝર ઝર - ધર ધર - હર હર એકાકાર હોવું એટલે પરિક્રમા 🙏

હે પુષ્ટિ સંસ્કાર! ધન્ય છે 🙏 ધન્ય છે 🙏

આ માર્ગ ને અને માર્ગ દ્રષ્ટા ને અને માર્ગ નિભાવનાર ને🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

જ્યારથી સંકલ્પ કર્યો કે મારે વ્રજ પરિક્રમા જાઉં છે

ત્યારથી જ કોઈ મને સાદ પાડે છે - પધારો

ત્યારથી જ કોઈ નાદ મને સંભળાય છે - આઓ

ત્યારથી જ મારામાં કોઈ એવી ઊર્મિઓ ઊઠે છે જે મને વારંવાર ત્યાં જવા પ્રેરણા આપે છે

ત્યારથી જ મનમાં કોઈ એવી ગૂંજ ઊઠે છે - હમણાં જ દોડુ

ત્યારથી જ અંગ અંગમાં એવા તરંગો જાગે છે - હમણાં ઉંડુ

ત્યારથી જ ન ચિત્તડું હાથમાં નથી

બસ કોઈ કોઈ સંકેત

બસ કોઈ કોઈ અંદેશ

બસ કોઈ કોઈ સંદેશ.......

આઓ - આજાઓ - આવો 🌷🙏🌷

કામકાજમાં ન મનડું ચોંટે

વિચાર વમળમાં ન ચિત્તડું દોડે

બસ! એક જ ખ્યાલ - વ્રજ વ્રજ વ્રજ

વ્રજ જાઉં છે મનડું દોડે દોડે

વ્રજ જાઉં છે ચિત્તડું દોડે દોડે

વ્રજ જાઉં છે તનડું દોડે દોડે

વ્રજ જાઉં છે દિલડું દોડે દોડે

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

હે યમુના! હે યમુના! હે યમુનાજી!🙏
આપનું સ્મરણ! આપનું પુષ્ટિ વરણ!
મનને ઝગઝગાડે
તનને તડપતડપાવે
નયનને ખળખળાવે
હે ધાત્રી! હું બાળ તારો
કેમ મને આ સંસાર સળગાવે?

હું પુષ્ટિ સંસ્કાર આચરણો
હું શ્રી વલ્લભનો આશરણો
હું શ્રી શ્રીનાથજીનો દાસરણો
કેમ મને જગ માયા આંતરે?

નથી હું પુષ્ટિ સિદ્ધાંત વિસરણો
નથી હું પુષ્ટિ જીવ વિહ્વળો
નથી હું પુષ્ટિ ભક્તિ અજાણો
કેમ હું રહું શ્રી યમુનાનો પરજાયો?

મને છે શ્રી વલ્લભ ની શિખ
મને છે શ્રી પુષ્ટિ ની ભીખ
મને છે શ્રી અષ્ટસખા ની ચીખ
કેમ હું સહૂ જન્મોજન્મ ની વિખ?

હે યમુના! તુ મને કરદે સમસ્ત દૂરિતક્ષયો 🙏
હે વલ્લભ! તુ મને કરદે સ્વભાવવિજયો 🙏
હે શ્રી શ્રીનાથજી! તુ મને કરદે પરમપ્રેમીયો 🙏
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

"उन्हें कान्हा मिलें या मिले श्याम

मुझे तो बस एक पलक मिलें

जिसमें बसे हैं मेरा मन, तन और जीवन "

जो है मेरा प्रेम, प्रियतम, प्रिये "

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक जिज्ञासा है

यह जिज्ञासा में शायद गहराई से समझ पाये तो हम जो आज यह युग में जी रहे है उनमें कुछ ऐसी राह और मार्गदर्शन पाये जिससे हम श्री कृष्ण को अपने निकट पाये 🙏

उद्धव जब गोकुल श्री यशोदा - श्री नंदबाबा के घर पहुंचता है और जो भी परिस्थिति देखता है तब जो भी बातें श्री यशोदा और श्री नंदबाबा से होती है तब वह उद्धव की हर बात स्वीकार करके अपने आपको शांत कर देते है 🙏

क्या यह शास्त्रोक्त, आध्यात्मिक्त, प्रेमोक्त सही हो सकता है कि - श्री यशोदा और श्री नंदबाबा शांत हो गए?

अगर यह शांत होना सत्य परिभाषा है तो हम भी कहीं जन्मों जन्म ले हमें श्री कृष्ण - हमारा प्रेमास्पद कैसे मिले?

सैद्धांतिक और प्रेमलक्षणा भक्ति के सही स्पंदनो से समझने कि अति आवश्यकता है 🙏

अवश्य चिंतन करके हम संवाद करे तो सही दिशा मिल सकती है 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

વ્રજ વ્રજ કરતું મન
વ્રજ વ્રજ કરતું તન
વ્રજ વ્રજ કરતો રાત દિન સમય
સુંદર સુંદર દર્શનની ઝાંખી કરાવે
સુંદર સુંદર મનોરથો મનમાં પુરાવે
સુંદર સુંદર ઉત્સવો નાચ નચાવે

નયન બ્રહ્મ મુહુર્તમાં દિન જગાવે
મન મંગળ મંગળ આરતી ગાયે
હસ્ત દાન લીલાની સેવા કરાવે
પગ પરિક્રમાની યાત્રા દોડાવે

કેવો મધુર ઉમંગ
કેવો મધુર રંગ
કેવો મધુર તરંગ
કેવો મધુર સત્સંગ

ક્ષણ ક્ષણ વ્રજ પરિક્રમા
કણ કણ વ્રજ પરિક્રમા
રણ રણ વ્રજ પરિક્રમા
પ્રણ પ્રણ વ્રજ પરિક્રમા

હે મન! તુ કાહે શ્રી કૃષ્ણ કૃષ્ણ કરે
અવશ્ય તને વ્રજ પરિક્રમા કરાવું છું
હે નયન! તુ કાહે શ્રી યમુના યમુના કરે
અવશ્ય તને વ્રજ દર્શન કરાવું છું
હે તન! તુ કાહે શ્રી વલ્લભ વલ્લભ કરે
અવશ્ય તને શ્રી વલ્લભ બેઠકજી કરાવું છું
હે ચિત્ત! તુ કાહે શ્રી ગિરિરાજ ધરણ કરે
અવશ્ય તને ગિરિરાજ તળેટી પહોંચાડું છું
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

श्री गोवर्धन तळेटी मेरो गांव

नयन खोलु गिरिराज दर्शन होय

डगर चलु गोवर्धन परिक्रमा होय

दंडवत करु गिरिराज चरण स्पर्श होय

सेवा धरु गोवर्धन शृंगार धरण होय

भोग लगाऊं गिरिराज हंसत आरोगोय

योग जगाऊं गोवर्धन आलिंगन भराय

हे गिरिराज! नमन नमन नमन 🙇

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 💐🙇💐

" વ્રજ પરિક્રમા "
" કહા કરો વૈકુંઠ હિ જાઈ
જહાં નહીં બંસીવટ જમુના
ગિરિ ગોવર્ધન નંદકી ગાઈ
જહાં નહીં વે કુંજ લતા દ્રુમ
મંદ સુગંધિ બહુત ન બૌઈ
કોકિલ મોર હસ નહીં કુંજત
તાકો બસિવૌ કાહિ સુહાઈ
જહાં નહીં બંસી ધૂની બાજત
કૃષ્ણ ન પુરબત અધર લગાઈ
પ્રેમપુલક રોમાંચ ન ઉપજત
મન બચ ક્રમ આવત નહીં દાઈ
જહાં નહીં યે ભૂમિ વૃંદાવન
બાબા નંદ જસોમતિ માઈ
ગોવિંદ પ્રભુ તજિ નંદસુવનકો
વ્રજ તજિ વહાં મેરી બસત બલાઈ "

હે ઉપદેશક! હે સૂચન દર્શક!
હે ભવિષ્ય ભાસ્કર!
તુ મને વારંવાર કેમ કહે છે!
વૈકુંઠ જવાનું છે
વૈકુંઠ નો હર ક્ષણ સ્મરણ રહે
વૈકુંઠ જ અમારું મૂળ સ્થાન છે

નાં નાં! 🙆 મને નથી જાઉં વૈકુંઠ
મને તો જાઉં છે વ્રજ
જ્યાં મળે મને મારો પ્રિયતમ
જ્યાં મળે આનંદ ઉમંગ પ્રેમ
એટલે જ
" વ્રજ વહાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું "
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙆🌷

श्याम मैं नहीं रह पाऊंगी

बिन तेरे दर्शन के चरण

नहीं रह पाऊंगी श्याम!

नहीं रह पाऊंगी घनश्याम

श्याम मैं नहीं रह पाऊंगी घनश्याम 🙏

बंसी की धून बजे

प्रीत की पायल बजे

मैं कैसे रहूं तुम बिन आश

श्याम मैं नहीं रह पाऊंगी घनश्याम 🙏

छम छम राधा पायल बाजे

खन खन कान्हा चुड़ी खनके

मैं कैसे रहूं तुम बिन प्यास

श्याम मैं नहीं रह पाऊंगी घनश्याम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

" યમુનાષ્ટક " નાં શબ્દ સ્વર ગૂંજ્યા કર્ણ પટલ માં

મારૂં મનડું દોડ્યું શ્રી યમુનાજી નાં દર્શન માં

જિજ્ઞાસા ભરેલ નયનો ટળવળયા શ્રી યમુનાજી ઝાંખી માં

ડગ ડગ ભરતા ભરતા તન પહોંચ્યું શ્રી વિશ્રામઘાટે

અનંત હેતનું વાત્સલ્ય અમૃત ચોંટ્યું અંગ અંગ માં

યમુના યમુના હે ધાત્રી યમુનાજી! શત શત નમન

માનસી ઝાંખી - માનસી દર્શન - માનસી સ્મરણ માં તારું

'વ્રજ પરિક્રમા' ની તાલાવેલી હે યમુનાજી મારું શરણ સ્વીકારો

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

હું એકલી અટુલી

કાન્હા માં મટુલી

મનડું શ્રી કૃષ્ણ વરેલી

ચિત્તડું ભટકે ભટુલી

જીત દેખું કાન્હા કાન્હ

સદા શ્યામ રંગ ડૂબેલી

શ્યામ શ્યામ શ્યામ

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

કેટલું અનોખું વર્તુળ!

કૌટુંબિક ચોબાજી!

જેમની પાસે કૌટુંબિક પૂર્વજો નો ઇતિહાસ 👈

દાદા! પર દાદા! વડ દાદા! ઘટ દાદા!

ઓહહહ અનોખી નોંધણી

એક એક સભ્ય ની ઓળખ

દર વર્ષે અવશ્ય - જય યમુના મૈયા કી 🙏

જય ગિરિરાજ ધરણ કી🙏

સદા આશીર્વાદ

સદા સ્મરણ કરાવવું

પરિક્રમા

વ્રજ યાત્રા

શ્રી યમુના પાન

શ્રી બેઠકજી - ઝારી

શ્રી ગોવર્ધન - દૂધ અભિષેક

શ્રી ગિરિરાજ પરિક્રમા

કંઈક તો છે!

અદભૂત! અલૌકિક! અતુલ્ય!

ભક્તિ ભક્તિ 🌷🙏🌷

હે વ્રજ પરિક્રમા વાસી 🌷🙏🌷

આપને પુષ્ટિ પ્રણામ 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

વ્રજ જાઉં છે શ્રી યમુનાજી પોષણ કરજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી ગોવર્ધન રક્ષણ કરજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વલ્લભ પુષ્ટ કરજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી અષ્ટસખા ચરિત્ર ઘડજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ વાસી શરણ દે જો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ રજ ધરણ કરજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ લીલા વરણ કરજો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ દાસ સેવા સ્વીકાર જો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ ભૂમિ દંડવત પ્રણામ સ્વીકાર જો

વ્રજ જાઉં છે શ્રી વ્રજ વાસ આપજો

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

खननन खनके रे

रणक रणक रे मेरे मन के मित

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

नीली हरी चूड़ियां

लाल पीली चूड़ियां

चूड़ियां की खनक पर मेरे नैन तड़पे रे

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

धड़कन की ताल पर

सांसों के आलय पर

चूड़ियां की धून पर मेरे अधर तरसे रे

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

चूड़ियां खनके रे मेरे मन के मित

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे प्रिये हे मेरे प्रियतम!

तुम ही तो हो मेरी आत्मा

तुम ही तो मेरे परमात्मा

तुझसे ही है मेरा हे रब

तुझसे ही है मेरा हे अब

आये हो मेरी प्रीत में तुम श्याम बन कर

आये हो मेरी रीत में तुम मोहन बन कर

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

ત્રણ લોક ચઉદ ભુવન પ્રેમ ક્યાંય ધ્રુવ નહીં

પ્રેમ પ્રેમ ત્યાંજ છે જ્યાં શ્રીવૃંદાવન છે "

સ્ત્રી નું હ્રદય વાત્સલ્ય સભર છે

પુરુષ નું હ્રદય પ્રેમ સેવક છે

સ્ત્રી નું હ્રદય પ્રેમ સંવર્ધક છે

પુરુષ નું હ્રદય પ્રેમ પ્રવર્તક છે

જ્યાં વૃંદાવન છે ત્યાં પ્રેમમય ગોપી છે

જ્યાં વ્રજ છે ત્યાં પ્રેમ રજ ગોવર્ધન છે

જ્યાં વાંસળી વાગે છે ત્યાં પ્રેમ સમર્પણ છે

જ્યાં પાયલ રુમઝુમે છે ત્યાં પ્રેમ વરણ છે

જ્યાં વન વન નિકુંજ છે ત્યાં મન મન મિલન

જ્યાં તટ તટ શ્રીયમુના ત્યાં ઘટ ઘટ લીલા

જ્યાં એક એક પ્રીત તત્વ ત્યાં ઘડી ઘડી નટખટતા

જ્યાં ક્ષણ ક્ષણ પ્રેમ ગૂંજ ત્યાં શ્વાસ શ્વાસ વિરહતા

હે રાધા! હે કૃષ્ણ!

જ્યાં તારો પ્રેમ ત્યાં મારી દાસત્વતા 🙏

મને વ્રજ યાદ આવે છે 🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ "

હાં! જીવનમાં
દાદીમા
માતા
પત્ની
દીકરી
પુત્ર વધુ
પૌત્રી
સાચે જ પુરુષ નું જીવન અનોખું અને વિશિષ્ટ બનાવે છે 🙏
ઘર માંથી જેવો બાહર જાઉં છું, અવશ્ય મન અને આત્માને લાગે જ છે કે કંઈક છોડી ને જાઉં છું 🙏
અને જ્યારે જ્યાં હોઉં ત્યાં થી ઘરે આવવા નીકળું છું ત્યારે અવશ્ય મન આત્માને લાગે જ છે કે મારાં ને મળીશ 🙏
કેવું અદભુત અને અવિસ્મરણીય!
આપણું કુટુંબ આ જ વાતાવરણ થી ઘડાયેલું છે અને સંકળાયેલું છે 🙏
કોને પૈસા જોઈએ છે?
કોને નામ જોઈએ છે?
કોને માન જોઈએ છે?
કોને સન્માન જોઈએ છે?
કોણ છે અભિમાની?
કોણ છે ક્રોધ વાળું?
કોણ છે વૈરી?
કોણ છે દુશ્મન?
કોણ છે અજાણું?
કોઈ નહીં 🙏
સર્વે છે વાત્સલ્ય નાં આધાર 🙏
સર્વે છે પ્રેમ નાં આવિષ્કાર 🙏
સર્વે છે બલીદાન નાં સેવક 🙏
સર્વે છે સંસ્કાર નાં ઉપાસક 🙏
નથી થવું રોગી 👈
નથી થવું ભોગી 👈
નથી થવું ત્યાગી 👈
નથી થવું વૈરાગી 👈
થવું છે એક કુટુંબી 🙏
અહીં જ છે ઈશ્વર 🙏
અહીં જ છે પરમેશ્વર 🙏
અહીં જ છે રસેશ્વર 🙏
અહીં જ છે કુટુંબેશ્વર 🙏
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌹🙏🌹

" વ્રજ પરિક્રમા "

શ્રી યમુનાજી આજે વ્રજ પરિક્રમા કરવા નીકળી છે. વ્રજમાં જ્યાં જ્યાં નજર છે ત્યાં ત્યાં શ્રી યમુના છે. 🙏

અતિ સૌભાગ્યવાન છે વ્રજવાસી
અતિ આનંદમય છે વ્રજવાસી
અતિ પુષ્ટિજીવ છે વ્રજવાસી

દ્વાર દ્વાર પર શ્રી યમુનાજી
શરણ શરણ પર શ્રી યમુનાજી
વરણ વરણ ધર શ્રી યમુનાજી
ચરણ ચરણ ચાંપે શ્રી યમુનાજી

ગોપીજન ની ધરણાં થી ધાયા શ્રી યમુનાજી
પુષ્ટિજીવ ની યાચના થી પધાર્યા શ્રી યમુનાજી
વ્રજવાસી ની પ્રાર્થના થી આમંત્ર્યા શ્રી યમુનાજી
વૈષ્ણવજન ની નમન થી નિમંત્ર્યા શ્રી યમુનાજી

છે આજે અનોખી પરિક્રમા
છે આજે ઉજવલ પરિક્રમા
છે આજે ભક્તિવર્ધિની પરિક્રમા
છે આજે દૂરિતક્ષય પરિક્રમા

આનંદ આનંદ આનંદ
પુષ્ટાનંદ પુષ્ટાનંદ પુષ્ટાનંદ
વ્રજાનંદ વ્રજાનંદ વ્રજાનંદ
રજાનંદ રજાનંદ રજાનંદ
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

क्षण
सांस
स्वर
विचार
नजर
रंग
रज
प्राण
धन
नहीं है किसीका - कब, कैसे और क्यूं आएं और गएं यह कौन जानता है?
यह जानने के लिए मन - तन - जीवन और नैन को स्थिर करना होता है 🙏

यह स्थिरता जो पा गया वह सबकुछ पा गया 🙏
जैसे अष्टसखाएं ने पाया 🙏
जैसे नरसिंह मेहता ने पाया 🙏
जैसे बाई मीरा ने पाया 🙏
जैसे सकुबाई ने पाया 🙏
जैसे सोक्रेटीस ने पाया 🙏
जैसे ऋषिओं ने पाया 🙏

सोच लें!
न तो मैं सेवक हूं
न तो मैं भक्त हूं
न तो मैं दास हूं
न तो मैं वैज्ञानिक हूं
एक जीव की तरह जीता हूं और एक जीव की तरह आता-जाता रहता हूं 🙏
आज जागा हूं तो जानना तो पड़ेगा ही
यह क्षण, यह सांस, यह स्वर, यह विचार, यह नजर, यह रंग, यह रज, यह प्राण, यह धन क्या है? क्यूं है? कैसे है?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

श्री यमुनाजी श्री महाप्रभुजी श्री व्रजवासी

आपको शत् शत् नमन 🌷🙏🌷

व्रज परिक्रमा का पंथ विशुद्ध पुष्टि हो गया

एक एक कुंज एक निकुंज एक स्थली छू गये

कण कण कण रज रज रज पावन पा गये

गली गली गली घर घर घर दर्शन करवा गये

आपकी कृपा आपकी अनुकंपा हम पा गये

श्री यमुनाजी पूजा पुष्टि पान करवा गये

श्री महाप्रभुजी बैठक चरण स्पर्श दे गये

श्री श्याम सुंदर सी यमुना महाराणी की जय

श्री पुष्टिमार्ग प्रणेता श्री वल्लभाचार्य की जय

जय जय श्री यमुना मैया जय जय श्री वल्लभ रखवैया

पुष्टि परिक्रमा का पंथ निराला हममें जगा गये

धन्य धन्य श्री यमुना धन्य धन्य श्री वल्लभ

जन्म जीवन पुष्टि पुरुषार्थ से उद्धार गये

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

फूल! हां फूल खिला अपने प्रेम में

फूल! हां फूल खिला अपने रंग में

बस!

खिल गया प्रेम में

खिल गया रंग में

सदा अपनी सांसों में रखना

सदा अपनी बाहों में रखना

सदा अपने रंग में रखना

फूल खिलत खिलत सांसों से एक

फूल खिलत खिलत रंग से एक

बस!

यही ही दिल खिला

श्याम श्याम हो गया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" વ્રજ પરિક્રમા "

આજે શ્રી યમુનાજી પધાર્યા મારે નિકુંજ દ્વારે રે

આજે શ્રી વલ્લભ પધાર્યા મારે સેવા સ્થલી રે

મનનાં નિકુંજ ને પ્રેમ રંગ શૃંગારી

તનનાં સ્થલી ને અપરસ વિશુદ્ધ ધારી

શ્રી યમુનાજી ને હ્રદય આસન બિરાજવ્યા રે

શ્રી વલ્લભ ને અંગ આસન સ્થાપ્યા રે

આજે શ્રી યમુનાજી પધાર્યા મારે નિકુંજ દ્વારે રે

આજે શ્રી વલ્લભ પધાર્યા મારે સેવા સ્થલી રે

પુષ્ટિ પ્રભુ સાથે શ્રી યમુનાજી શોભાવ્યા

પુષ્ટિ સંસ્કાર આચરણે શ્રી વલ્લભ સન્મુખ્યા

શ્રી યમુનાજી ઝારીજી સ્વરૂપ ધારણ ધર્યા રે

શ્રી વલ્લભ આચાર્ય સેવક સ્વરૂપ દંડવત ધર્યા રે

આજે શ્રી યમુનાજી પધાર્યા મારે નિકુંજ દ્વારે રે

આજે શ્રી વલ્લભ પધાર્યા મારે સેવા સ્થલી રે

દાસ વૈષ્ણવ નાં ચરણ સ્પર્શ સ્વીકારજો🙏

દાસ પુષ્ટિ જીવ નાં પ્રણામ સ્વીકારજો 🙏

મારા શ્રી યમુનાજી મારા શ્રી વલ્લભ

સદા મને વૈષ્ણવ સેવા આપજો રે

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - व्रज परिक्रमा - ५४
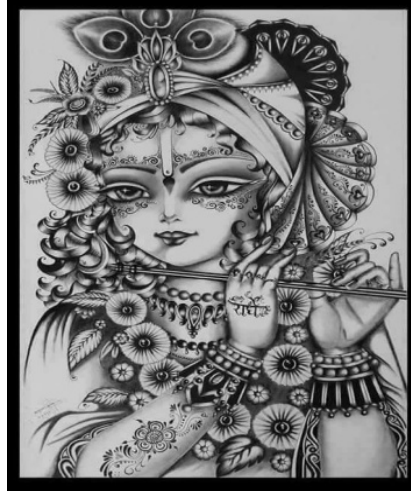
सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक

Vibrant Pushti

५३, सुभाष पार्क सोसायटी, संगम चार रास्ता, हरणी रोड

वडोदरा - ३९०००६ गुजरात भारत

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 93272 97507